

सुभाष चंद्र बोस के विषय में रोचक जानकारियाँ

आजादी के लिए संघर्ष के दौरान **Subhash Chandra Bose** के नारे **"तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा"** ने करोड़ों भारतीयों के दिल में देशभक्ति की आग प्रज्वलित कर दी थी. आज भी ये शब्द आगे बढ़ने और देश के लिए कुछ करने को प्रेरित करते हैं. इस नारे को जिन्होंने गढ़ा वह **Subhash Ji** एक सच्चे देशभक्त और सिद्धांतवादी इंसान थे जिन्होंने भारत को आजादी दिलाने का भरपूर प्रयास किया.

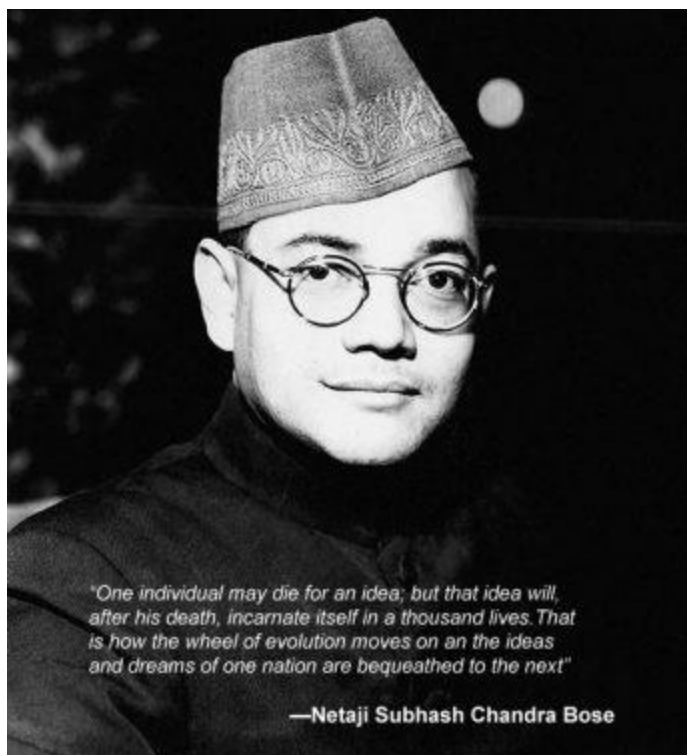
1. SUBHASH CHANDRA BOSE बचपन से ही एक बहुत ही मेधावी छात्र और देश भक्त थे

Subhash Chandra Bose उड़ीसा में एक बड़े परिवार में पैदा हुए थे. बचपन से ही वह प्रतिभाशाली थे और हमेशा पढ़ाई में अव्वल रहे. प्रथम श्रेणी से उन्होंने **1918** में दर्शनशास्त्र में स्नातक किया. शुरुआती दिनों से ही उनके रक्त में देशभक्ति की लहर दौड़ती थी. **Presidency College** के **Professor Oaten** ने जब राष्ट्र के खिलाफ कुछ शब्द बोले थे तो बोस ने कड़ी आपत्ति जताई, परिणामस्वरूप उन्हें कॉलेज से निष्कासित कर दिया गया.



2. ICS (अब Civil services) परीक्षा में चौथा स्थान लाया

स्नातक करने के बाद वह **ICS** परीक्षा देने के लिए इंग्लैंड गए. उन्होंने अपने पिताजी से वादा किया था कि इस कड़ी परीक्षा को वह उत्तीर्ण होकर जरूर दिखायेंगे. जैसी उम्मीद थी वैसा ही हुआ. उन्होंने इस परीक्षा में चतुर्थ स्थान पाया. वैसे उन्हें अन्दर से सरकार के लिए काम करने का बिल्कुल मन नहीं था. **Jalianwalla Bagh** में हुए नरसंहार ने उन्हें अन्दर से हिला दिया था और **1921** में उन्होंने इंटर्नशिप के दौरान ही **ICS** से इस्तीफा दे दिया.



3.SUBHASH CHANDRA BOSE दो बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष निर्वाचित किये गए

भारत वापस लौटने के बाद **Subhash Chandra Bose** ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ काम किया और स्वराज और फॉरवर्ड समाचार पत्रों से जुड़े. उन्होंने जल्द ही कांग्रेस के अन्दर अपनी पकड़ बना ली और **1938** और **1939** में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए. वह पूर्ण स्वराज के पक्षधर थे जिसका गांधी जी विरोध किया करते थे. गांधीजी और **INC** के अन्य सदस्य भारत को **Dominion status** दिलाने एवं धीरे-धीरे पूर्ण स्वराज की ओर बढ़ने की नीति पर चल रहे थे. इसी कारण उन्होंने अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया और **All India Forward Bloc** की स्थापना की.



4. उन्होंने अपने दुश्मन के दुश्मन से मदद मांगी

जब बोस को यह अहसास हुआ कि ब्रिटिश इतनी आसानी से देश को आजाद नहीं करेंगे तो उन्होंने दुश्मन के दुश्मन से मदद मांगने का फैसला किया और इसके लिए जर्मनी और जापान से सम्पर्क किया. उनके इस कदम से यह बिल्कुल निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि वह नाज़ी विचारधारा के पक्षधर थे. उन्होंने यह सब इसीलिए किया क्योंकि भारत को किसी भी तरह से अंग्रेजों के चंगुल से बाहर निकाला जा सके. जापान की मदद से उन्होंने आजाद हिन्द फौज (**Azad Hind Fauj**) की स्थापना की जिसने मित्र राष्ट्रों की सेना (**allied forces**) से **South East Asia** में युद्ध किया. **Japanese army** के साथ उन्होंने अंडमान निकोबार को आजादी दिलाई और आगे बढ़ते-बढ़ते फ़ौज के साथ मणिपुर भी पहुँच गए. मगर इसी समय अमेरिका द्वारा जापान पर परमाणु बम (**World War 2**) का प्रयोग कर दिया गया जिससे जापानी फ़ौज कमजोर पड़ गयी और आजाद हिन्द फ़ौज को पीछे हटना पड़ा.





5. वह देशभक्तों के देशभक्त थे

महात्मा गांधी भले ही **Subhash Chandra Bose** की **ideology** के खिलाफ थे मगर उन्होंने **Bose** को "**patriot of patriots**" की संज्ञा दी थी. **Bose** वास्तव में भारत को स्वतंत्रता दिलाने के लिए प्रतिबद्ध थे और उनको गांधी जी द्वारा दी गयी यह उपाधि गलत नहीं थी. वह उस समय के सबसे प्रतिभाशाली व्यक्तित्व और देशभक्ति की प्रतिमूर्ति थे, जिन्होंने हज़ारों युवाओं और युवतियों को प्रेरित किया था.





6. उनकी मौत एक रहस्य ही बनी रह गयी

लोग ऐसा कहते हैं कि उनकी मृत्यु **Taipei, Taiwan** में हुए एक विमान दुर्घटना में हो गयी. पर उनकी मौत (**death**) एक रहस्य (**mystery**) ही बनी रह गयी क्योंकि उनका शव नहीं मिला और **ashes** जापान ले जाया गया. कभी-कभी यह कयास लगाया जाता है कि वह जिन्दा थे और रूस में कुछ साल रहकर वापस भारत लौट गए. जो विमान दुर्घटनाग्रस्त हुआ था उसका कोई रिकॉर्ड **Taiwan** के पास नहीं है. हाल में नेताजी सुभाष चंद्र बोस से संबंधित **33** गोपनीय फाइलों की पहली खेप शुक्रवार को प्रधानमंत्री कार्यालय ने राष्ट्रीय अभिलेखागार को सौंप दी है.





7. वह भारत में 1985 तक Bhagwanji रूप में रहते थे

एक अफवाह यह भी है कि वह कई सालों तक **Bhagwanji** के नाम से भारत के राज्य उत्तर प्रदेश में रह रहे थे. वहाँ उनका एक नाम गुमनामी बाबा (**gumnami baba**) भी था. उन्होंने संन्यास ले लिया था और फिर से **Indian politics** में आना वे उचित नहीं समझते थे. ऐसा कहा जाता है कि गुमनामी बाबा के रूप में उनकी मृत्यु 1985 में फैजाबाद में हुई. गुमनामी बाबा का चेहरा सुभास चन्द्र बोस से बिल्कुल मेल खाता था.